

वेदों की खुशबू

ओ३म्

वेद सब के लिए

(धर्म मर्यादा फैलाकर लाभ दें संसार को)

VEDIC THOUGHTS

A Perfect Blend of Vedic Values And Modern Thinking

Monthly
Magazine

Issue
28

Year
3

Volume
4

January 2015
Chandigarh

Page
24

मासिक पत्रिका
Subscription Cost
Annual - Rs. 100-see page 2

विचार

नये वर्ष में संकल्प

आईये इस नव वर्ष में हमारे ऋषियों द्वारा कही बातों को जीवन में धारण कर अपना और अपने सम्पर्क में आने वालों का जीवन सुखी व आन्नदमय बनायें।

1 जब परिस्थिती आप के अनुकूल नहीं होंगी तब भी विनम्र रहेंगे और चेहरे की मुस्कान को बनायें रखेंगे।

2 घृणा, वैमनस्य और शत्रुता से निकलकर। सब से प्यार करेंगे। वेद की इस शिक्षा पर चलेंगे—हे परमेश्वर मुझे इस समर्थ बनायें कि मैं सब प्राणियों को मित्र की दृष्टि से देखूं और मुझे सब मित्र की दृष्टि से देखें। परमात्मा हम सब का पिता है। जब हम परमात्मा को पिता मानते हैं तो हम सब परमात्मा के बच्चे होने के कारण भाई बहन हैं।

3 उदारचित और संवेदनशील बनेंगे। दया और करुणा को अपना हथियार बनायेंगे।

4 दिन में 5 मिनट बैठ कर सोचेंगे कि क्या मैंने कोई ऐसा कार्य किया या कर रहा हूं जिस से मेरे आस पास के अभाग्यशाली

व्यक्तियों के जीवन में फर्क पड़े। “Even if we do not have any money for alms, we have a mouth to encourage and comfort others.”

5 रात को सोने से पहले यह सोचें कि मैं किसी ऐसे कार्य में लिप्त तो नहीं जिस में दूसरों को छलकपट, फरेब और धोखा दिया जा रहा हो। अगर ऐसा लग रहा है तो उस काम को छोड़ दूंगा।

वेद के इस सन्देश को याद रखेंगे

ईशावास्यमिदं सर्वं यत्किञ्च जगत्यां जगत्।
तेन त्यक्तेन भुक्तीथा मा गृधः
कस्य सिद् धनम्॥

इस विश्व में जो कुछ भी जड़-चेतन, चराचर है व ईश्वर का ही है। मैं इसे अपना स्वामी नहीं समझूंगा। ऐसी भावना रखते हुये यदि हम आसक्ति का त्याग करके



Contact: Bhartendu Sood, Editor, Publisher &
Printer # 231, Sec. 45-A, Chandigarh 160047
Tel. 0172-2662870 (M) 9217970381,
E-mail : bheartsood@yahoo.co.in

उस परमात्मा से सतत युक्त होते हुये धर्मपूर्वक, गिद्ध दृष्टि का त्याग कर विषयों का उपभोग करेंगे तो हमारे कार्य कभी भी हमारे लिये दुःख का कारण नहीं होंगे।

इसी तरह श्री कृष्ण का गीता में यह उपदेश याद रखें

“लोकसंग्रमेवाऽपि समपश्यन् कर्तुमर्हसि।”

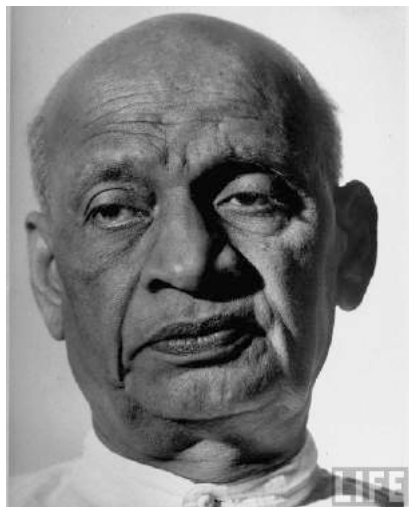
तुम्हें लोक कल्याण के लिये संग्रह करना चाहिये व निष्काम भाव से कर्म करना चाहिये अर्थात् तुम्हारा संग्रह लोक कल्याण में हेतु होना चाहिये। यदि तुम्हारे कर्मों की दिशा ठीक है तो कर्म तुम्हारे लिये बन्धन का कारण नहीं बन सकते।

इसी तरह गुरुवाणी के उपदेश याद रखें—सुच्चे मार्ग चलदियां उस्तत करे जहान। अर्थात् जो मानव सच्चे और कल्याणकारी मार्ग पर चलता है, उसकी प्रशंसा सारा संसार करता है।

आर्य समाज के इस नियम को जीवन में धारण करेंगे—हम अपनी ही उन्नति में सन्तुष्ट न रहें किन्तु सब की उन्नति में ही अपनी उन्नति समझें।

हमारे संस्थान यह शपथ लें कि संस्थानों में आये कम से कम 50% पैसे का प्रयोग हम कल्याणकारी कार्यों और दुखियों का जीवन सुधारने में लगायेंगे।

संवेदनशीलता महान व्यक्तियों का स्वभाविक गुण है



स्वतंत्र भारत के पहले गृह मंत्री सरदार बल्लभ भाइ पटेल न्यायालय में किसी केस की पैरवी कर रहे थे कि अचानक चपड़ासी ने उनके हाथ में तार थमा दिया। सरदार पटेलने तार पढ़ा व पढ़ कर जब मे डाल दिया।

केस की पैरवी के बाद जब सरदार पटेल अपने चैम्बर में आये तो उनकी आखों में आसूँ थे, पूछने पर बताया कि उनकी पत्नी के देहान्त की खबर थी, अगर न्यायालय में बताता तो न्यायालय का समय बर्बाद होता।

कुछ ऐसे होते हैं महान व्यक्ति। अपने से अधिक वे दूसरों के दुःखः सुख का ध्यान रखते हैं। संवेदनशीलता उनका स्वभाविक गुण होता है। संवेदनशीलता जैसे गुण ने मोहनदास को महात्मा गांधी बना दिया। अगर हम संवेदनशीलता हैं तो बाकी बहुत से गुण अपने आप आ जाते हैं।

पत्रिका के लिये शुल्क

सालाना शुल्क 100 रुपये है, शुल्क कैसे दें

1. आप 9217970381 या 0172-2662870 पर subscribe करने की सूचना दे दें। PIN CODE अवश्य दे
2. आप चैक या कैश निम्न बैंक में जमा करवा सकते हैं :—
Vedic thoughts, Central bank of India A/C No. 3112975979 IFC Code - CBIN0280414
Bhartendu sood, IDBI Bank - 0272104000055550 IFC Code - IBKL0000272
Bhartendu Sood, ICICI Bank - 659201411714, IFC Code - ICIC0006592
3. आप मनीआर्डर या at par का Cheque द्वारा निम्न पते पर भेज सकते हैं। H. No. 231, Sector 45-A, Chandigarh 160047.
4. दो साल से अधिक का शुल्क या किसी भी तरह का दान व अनुदान न भेजें। शुल्क तभी दें अगर पत्रिका अच्छी लाभप्रद व रुचिकर लगे।

यदि आप बैंक में जमा नहीं करवा सकते तो कृपया at par का चैक भेज दे।

प्रार्थना बिना आन्तरिक अन्वेषण, तप और अभ्यास के अधूरी है

डा. महेश पोरवाल

प्रार्थना में हम प्रभु का धन्यवाद करते हैं, प्रभु के गुणों का गान करते हैं और प्रभु से बहुत कुछ ऐसा मांगते हैं जो कि हमें सुधारे और बेहतर इन्सान बनाये। उदाहरण के लिये हम प्रभु से प्रार्थना करते हैं कि हमारे दुर्गण—काम, क्रोध, लोभ, सारे दुर्गण, दुर्वसन अर्थात् खराब आदतों व दुखों को दूर कर दीजिये, ताकी जो कल्याण कारक गुण, कर्म, स्वभाव व पदार्थ—जैसे धैर्य, सहनशीलता, विनम्रता, सन्तोष हमें प्राप्त हों। इन सभी को मांगने का उद्देश्य यही है कि हम बेहतर इन्सान बने।

परन्तु साथ में प्रार्थना के समय कुछ देर शान्त रहकर यह मनन करने की भी आवश्यकता है कि क्या हमने सचमुच इन बुराईयों पर विजय पा कर इन अच्छाईयों को ग्रहण किया है, अगर पूरा नहीं किया तो कितना किया है। जब आप ईमानदारी से अन्वेषण और मनन करेंगे तो आप यह स्वयं ही जांच सकते हैं। उदाहरण के

लिये—आप को किसी बात पर काम करते हुये कार्यस्थल पर क्रोध आ गया जब आप शाम को या सुबह प्रार्थना करते समय अपना आन्तरिक अन्वेषण करते हैं, मनन करते हैं तो एक दम यह बात आपको छू जायेगी कि आपने आज क्रोध किया, फिर आप और दृढ़ संकल्प करते हैं कि अगली बार नहीं करूंगा, यही प्रार्थना का फायदा है। यदि आप आन्तरिक अन्वेषण और मनन नहीं करते हैं तो आपकी प्रार्थना अधूरी है। साथ में यह भी आवश्यक है कि प्रार्थना करते हुये हम हर एक शब्द का मतलब जाने न की एक गाने की तरह उसे जल्दी जल्दी बोलकर खत्म करें। मनन भी तभी होगा जब महत्व को समझेंगे।

इस के बाद अगला कदम है तप और अभ्यास

तप और अभ्यास भी प्रार्थना का महत्वपूर्ण हिस्सा है, क्योंकि

उस प्रार्थना का कोई मतलब नहीं और एक कर्मकाण्ड बन कर ही रह जाती है जब तक कि हम प्रार्थना में कही बातों को पूरा करने के लिये तप और अभ्यास नहीं करते। क्रोध न आये उस के लिये तप और अभ्यास करना पड़ेगा। जैसे ही क्रोध की स्थिति आये, उसे निपटने के लिये तप और अभ्यास दोनों ही चाहिये। उदाहरण के लिये आर्य समाज में शान्ति पाठ तो

कर लिया पर उसके बाद आपस के लड़ाई झगड़े शुरू कर दिये तो वह प्रार्थना, प्रार्थना नहीं रहती महज समय की बरबादी है।

प्रार्थना कब और कैसे करें
प्रार्थना तो कभी भी कर सकते हैं, कोई खास समय नहीं पर आवश्यक यह है कि उस समय मन शान्त हो और आसपास भी शान्ति का वातावरण हो, इसलिये सुबह का समय सब से अच्छा है और ऐसे किसी स्थान पर चले जायें जहां शान्त हो, जैसे कि पार्क। हा, अगर घर में ही ऐसा माहोल हो तो घर में ही कर लें। याद रखें

प्रार्थना भावना कि बात है न कि किसी खास भाषा की। ईश्वर हमारी भावना ही समझता है न कि भाषा। सब से पहले आवश्यक है कि कुछ मांगने या कहने से पहले ध्यान द्वारा ईश्वर के साथ एक हो जायें। उसके बाद ईश्वर की स्तुती, धन्यवाद और कुछ मांगने की बात आती है। मन्त्र तो समझने के लिये और अपने विचारों और सोच को अच्छा करने के लिये हैं, न कि ईश्वर के आगे बोलने के लिये। ईश्वर तो वह जानेगा जो हमारे मन में है।

जब तक मन शान्त और स्थिर नहीं हो जाता प्रार्थना में मन नहीं लगेगा। प्रश्न उठता है, व्यक्ति का मन शान्त कब होता है? इसका जवाब है जब आदमी दया-क्षमा-प्यार-मनमता आदि गुणों से अपने जीवन को भर लेता है, और क्रोध, अहंकार, लोभ, काम आदि से दूर रहता है तब मन शान्ति से भर जाता है।



सम्पादकिय

क्या दिल्ली में हुये योन अपराध के लिये हमारी नई सभ्यता जिम्मेवार नहीं?

आज जिस सभ्यता के हम गुलाम बनते जा रहे हैं न वह हमारी है न ही पूर्व की न ही पाश्चात्य, यह सभ्यता है 'सिर फिरो की सभ्यता'

मैं किसी भी तरह उस व्यक्ति के आमामनुषिक कार्य का पक्ष नहीं ले रहा जो हाल में दिल्ली में हुई योन घटना का दोषी है। उस के बारे में सारा समाज खास कर हमारी स्त्री उत्थान संस्थाएँ और हमारा मिडीया बड़े जोर शोर से लगा हैं। अपराधी को सख्त से सख्त सजा शीघ्र से शीघ्र मिलनी चाहिये। पर क्या इससे हमारे इन अपराधों में कोई कमी आ सकती है, अगर आप मुझ से पूछें तो नहीं।

कारण हम अपनी सभ्यता से अलग हो कर ऐसी सभ्यता के गुलाम बनते जा रहे हैं जो कि न तो हमारी है न ही पूर्व की न ही पाश्चात्य, मेरे अनुसार उसे 'सिर फिरो की सभ्यता' कहना उचित होगा। हां आज इसी सभ्यता का हमारे अधिकतम मध्यम वर्ग और नये उच्च वर्ग के पिरवारों में बोल बाला है। इस सभ्यता की मुख्य बातें हैं—जैसे ही कुछ पैसा आये या आप अच्छा कमाने लगें तो अपनी पुरानी सभ्यता को हीन समझो, सत्संगों से दूर रहो, जो आज के सिनेमा में स्त्री स्वतन्त्रता के बारे में दिखाया जा रहा है, जैसे कि लड़को के साथ शराब पीनी खुले आम मोज मस्ती, शादी से पहले एक दूसरे को समझने के लिये **live in relationship** व्यवसाय के बाद जो समय मिले उसे घर में न बिताकर कलबो और पार्टीयों में बिताओ, परिवार में बड़ो को बुद्धु समझो और उनकी बात न सुनो। अपने ऐशो आराम के जीवन की जरूरतों को पूरा करने के लिये बैंको से कर्ज लो फिर उमीद करो माता पिता उस की भरपाई करें।

मेरे अनुसार कोई भी युवा लड़की अगर देर रात को किसी पार्टी में शराब पी कर अकेली टैक्सी में जायेगी और नशे के कारण उसकी ऐसी हालत हो कि उसे नींद पड़ जाये और यह भी पता न लगे की टैक्सी वाला कहाँ ल जा रहा है तो वह भारत क्या विश्व के अधिकतर भाग में सुरक्षित नहीं है। कैन है इस के लिये जिम्मेवार? — हमारी नई 'सिर फिरो की सभ्यता' और कौन इस सभ्यता को पनपने में सहायता कर



रहा है—हम माता पिता, हमारा सिनेमा जगत, हमारा व्यवसायिक सफलता को सब कुछ मानने वाला मिडिया और दूरदर्शन। पर सिनेमा जगत और दूरदर्शन यह सब कुछ न कर पाये अगर हम माता पिता अपनी जिम्मेवारी निभायें, जो कि हम नहीं कर रहे। जिसके ये बुरे परिणाम हैं। आज हमारे मध्यम आय वर्ग के माता पिता के लिये एक ही चीज का महत्व है और वह है बच्चों का कैरियर। कितना महत्व है उस कैरियर का कि उसके लिये हम बच्चों को ईश्वर से, सत्संग से, रिश्तेदारी से, सगे सम्बन्धियों से, समाजिक कर्त्तव्यों से दूर कर देते हैं सिर्फ इस लिये की इनके लिये समय देने से हमारे वच्चे के नम्बर कम न हो जायें। जो लोग कैरियर की रट से गुजर चुके हैं वे शायद यह आपको बतायेंगे कि अच्छे नम्बर लेकर किसी अच्छे कालेज में दाखला हो जाना ही सब कुछ

POWER OF BRAHMCHARYA

Prof. S P Puri



According to Vedic culture, the edifice of life is a four-storied mansion. In the mansion, the ground state is most important as the upper three stories are based on it. It is called *Brahmcharya* (continence or celibacy). As the childhood and youth are extremely important stages, so these should be regulated by practicing purity and tranquility.

Brahmcharya means leading a life of pure thoughts, pure actions and pure inspiration. Unfortunately, today people tend to regard *Brahmcharya* as living in unmarried state. *Brahmcharya* means whatever thoughts we entertain, whatever actions we perform and whatever activities we undertake, these all should be filled with the consciousness *Brahma* (the supreme omnipresent divine). When we conduct ourselves with the awareness that Divine is present everywhere, we are observing *Brahmcharya*.

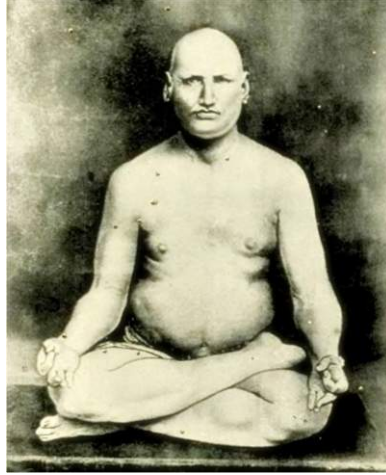
Brahmcharya is not confined in the stage of one's boyhood and adolescence, but is implied in the other three stages of life as well.

The period of a student's life is the most crucial stage as all the other three are based upon it. The concept of purity or sanctity that we develop during the student life, will determine the degree of purity in the later stages. This stage being the foundation has to be strong and sturdy if it has to sustain the subsequent stages firmly.

पृष्ठ 4 का शेष

नहीं और न ही किसी अच्छी कम्पनी में प्लेसमेंट होने से व्यक्ति न तो अपने कैरियर में सफल हो जाता है और न ही जीवन में। उस में सफलता के लिये बहुत सारे ऐसे गुण चाहिये जो कि सत्संग, ईश्वर पर पूर्ण विश्वास, माता पिता और बड़ों के आशीर्वाद और समाज में रहते हुये संवेदनशील नागरिक बनने से ही प्राप्त होते हैं। आवश्यकता से अधिक पैसा आ जाने पर उसका ठीक प्रयोग कैसे करें, जब विफलता हमें हताश कर रही हो तो स्थिर कैसे रहें, सफलता को कैसे लेना है और विफलता को कैसे यह बात अध्यात्मवाद से आती है और इस अध्यात्मवाद का स्रोत है सत्संग जिस में सब से

A true celibate possesses tremendous energy, a clear brain, gigantic willpower, clear understanding, retentive memory and inquisitive mind. Swami Dayanand Saraswati was a multi-faceted personality wedded with gigantic zeal of a social reform. He stopped the carriage of a Maharaja that was being driven by four horses. Once a bullock cart was struck in mud and the coachman was beating the bullocks mercilessly for moving forward. Rishi Dayanand out of compassion for the animals single-handedly could disengage the loaded cart out of the mud. Once he was attacked with a sword. He got hold of the sword and broke the sword with his hands. This was all due to his power of celibacy. All the spiritual leaders like Sankara, Vivekanand, Mahavira were celibates.



Thou are not the perishable body of flesh and bones alone. You are the immortal, all pervading, Sat-Chit-Anand Atman. Thou are living truth. Thou are absolute consciousness. One can attain the state of leading a life of *Brahmcharya*. This spirit should pervade your life and actions. Passions are the enemy of peace and prosperity and had to be subjugated by rigorous *Sadhana* and being conscious of our true nature. Then and only then, the divine splendor will radiate from our faces

The future of any country rests with the young people of five and twenty. If they are imbued with the values of spiritual and truthful living, the quality of life will be better for them and in turn, they will be able to serve as role models for others as well.

अहम भूमिका है माता पिता की।

अच्छा होगा बच्चे को कैरियर की राजधानी गाड़ी में तो विठाये पर साथ में सत्संग दें, उस के साथ काफी समय बितायें। ठीक समय पर मोबाईल उपलब्ध करायें और वह भी जो उसकी जरूरत को पूरा करें दे न की वह जो उसें के दास्त के पास है। अपने घर के बड़े बुढ़ों के पास बैठे और उनकी बातें सुने, उनके पास जीवन का अनुभव होता है। अगर इस तरह बच्चे का पालन पोषण होगा तो शराब पीकर अकेला रात को टैकसी में नहीं बैठेगा क्योंकि उसे उचित अनुचित की समझ होगी जो ज्ञान से सत्संग से आती है।

प्रसन्न रहने के लिये कुछ बातें

नीला सुद



सब से पहले याद रखें की प्रसन्न रहना आप के अपने उपर निर्भर करता है न कि दूसरों पर या बाहर की बस्तुओं पर। जब आप अपनी प्रसन्नता के लिये दूसरों पर या बाहर की बस्तुओं पर निर्भर रहना शुरू कर देते हैं तो आप शायद प्रसन्न न रह पायें। स्वामी रामतीर्थ ने तो यहां तक कहा है कि अगर आप अभी प्रसन्न नहीं हैं तो मत

सोचिये कोई ऐसा वक्त आयेगा जब आप खुश होंगे। प्रसन्न रहना तो मन की हालत है और विश्वास किजीये आप खराब से खराब हालत में भी प्रसन्न रह सकते हैं। अगर आप ने निश्चित कर लिया है कि आप खुश रहेंगे ही तो दुनिया का कोई भी व्यक्ति आप की खुशी को छीन नहीं सकता।

ईश्वर में पूर्ण विश्वास प्रसन्न व निश्चिन्त रहने के लिये बहुत बड़ी सोगात है। प्रसन्नता और निश्चिन्तता का सीधा सम्बन्ध है। जो व्यक्ति निश्चिन्त

रहता है वह प्रसन्न रहेगा ही। यह निश्चिन्तता आती है ईश्वर पर पूर्ण विश्वास से। जब हम ईश्वर पर पूर्ण विश्वास करते हैं तो ऐसा लगता है कि कोई बहुत बड़ी शक्ति हर समय हमारे साथ है जो कि हर कदम पर हमारी रक्षा करेगी और हमें ठीक रास्ते पर रखेगी। यही नहीं ईश्वर अच्छी बुद्धि का प्रदाता है। गायत्री मन्त्र में हम यही कहते हैं—हे ईश्वर मेरी बुद्धि आपके तेज स्वरूप से प्रकाशित रहें व श्रेष्ठ मार्ग पर चले। मेरी बुद्धि आप से कभी दूर न हो। ईश्वर का साथ वैसे ही है जैसे छोटे शिशु के लिये माता पिता का साथ होता है। मां की गोदी में



छोटा बच्चा अपने आप को सब से शक्तिशाली अनुभव करता है। ईश्वर में पूर्ण विश्वास एक ऐसा खजाना है जिसके आगे बाकी सब खजाने व शक्तियां छोटी रह जाती है। पर उसके लिये आवश्यक है कि ईश्वर के ठीक स्वरूप को पहले जाने न कि बाजार में बिकने वाले इन बाबों को ईश्वर मानकर विश्वास कर बैठे। जो इस ब्रह्मांड को बनाकर इस का संचालन कर रहा है और कण-कण में समाया है, हमारे अन्दर भी विराजमान है वही विश्वास व पूजा करने योग्य है। उसकी अराधना उसका ध्यान करने से ही हो जाती है, उसके लिये किसी कर्मकांड की आवश्यकता नहीं। ईश्वर की सच्चे मन से प्रार्थना में जो शक्ति है वह किसी और चीज में

नहीं। हो, पर यह भी नहीं कि हम ईश्वर पर विश्वास तो करें पर कर्म को छोड़ दें। जब हम कर्म करेंगे तभी ईश्वर हमें रास्ता दिखायेगा, दिशा देगा और सुबुद्धि देगा।

हे ईश्वर आप ने मुझे बहुत कुछ दिया है। कृप्या मुझ पर एक और कृपा कर दें। मेरा हृदय सदैव कृतज्ञता ;दूसरों के प्रति आभार से भरा

हो।

जब कि धन्यवाद तो शब्दों से बोलकर किया जाता है, कृतज्ञता हम अपने कार्यों

(actions) द्वारा ही व्यक्त कर सकते हैं। आप की प्रसन्न रहने की क्रिया धन्यवाद से प्रारम्भ होती है और कृतज्ञता पूर्ण कार्यों से उसे जीवन मिलता है। कृतज्ञता को अपने जीवन की शैली बनायें।

मुस्कराना सीखें और हर परिस्थिति में मुस्करायें। इस से जहां आप अपने व्यक्तित्व को निखारतें हैं वहीं दूसरों को भी

आन्नदित करते हैं। याद रखें आप की मुस्कराहट एक कमरे में बैठे सभी व्यक्तियों का मूड बदल सकती हैं।

मित्र बनाते रहें, जितने अधिक मित्र होंगे उतनी ही जीवन में निराशा कम होगी। अगर मित्र हैं तो भौतिक वस्तुओं की कमी भी आपको नहीं अखरेगी। हृदय में सब के लिये अच्छे विचार रखें, अच्छा सोचें, यह प्रसन्नता की कूँजी है। अच्छी बातें दूसरों से शेयर करते रहें। आप देखेंगे कि आपकी खुशी बढ़ रही है। जब दुखड़े ही सुनाओगे तो दुख बड़ेंगे।

यह प्रण कर लें कि मैं हर रोज कोई न कोई परोपकार का कार्य अवश्य करूँगा। ऐसा करने में जितना आपको आत्मिक और मानसिक सुख मिलेगा वह किसी और चीज में नहीं मिलेगा। दयालुता भी ज्ञान की तरह बाटने से और बढ़ती है। दयालु होने के लिये धन की आवश्यकता नहीं। एक बार एक छोटी कन्या विद्यालय से देर से लौटी, चिन्तित माँ ने कारण पूछा। उसने बताया कि उसकी सहेली के माता जी बीमार थे इसलिये वह रो रही थी। मैं उसको ढाँढस बंधाने व उसकी काम में सहायता करने के लिये उसके घर चली गई। दयालु तो जो ईश्वर ने आप को दिया है उसी को बांट कर भी हो सकते हैं। निदा फ़ाज़ली का बहुतसुन्दर शेर मैंने श्री सीता राम गुप्ता के लेख में पढ़ा था।

घर से मस्जिद है बहुत दूर चलो यूँ कर लें,
किसी रोते हुए बच्चे को हँसाया जाए।

उदारचित्त बने। दूसरों की गलती को न केवल माफ़ ही करें बल्की भूल जायें और मन से बाहर निकाल दें। ऐसा करने में दूसरे से अधिक सुख आपको मिलेगा।

दूसरे व्यक्ति की अच्छाई पर विश्वास आपको प्रसन्न रहने में सहायता करता है। हमारे सामने दो रास्ते हैं, पहला यह मान कर चलें कि दूसरा व्यक्ति हमारा बुरा ही चाहता है। ऐसे में दो चीजें होंगी, एक तो आप उसे मित्र बनाने से कतराओगे दूसरा बिना बात के अपने आप को खिंचे खिंचे महसूस करोगे जो कि आपको अवश्य प्रसन्न नहीं रख सकता। दूसरा यह सोच कर चलें कि सब मेरा अच्छा ही चाहते हैं और मुझे मित्र बनाना चाहते हैं, ऐसे में एक बात शर्तिया है कि दूसरे को आप का साथ सुखमय लगेगा। वह आप से मित्रता करना चाहेगा जो कि आपको प्रसन्न रखता है।

अच्छी सेहत एक ऐसी अमूल्य वस्तु है जो कि गरीब व्यक्ति को भी शहनशाह बना देती है और अगर सेहत नहीं तो करोड़पति भी अपने आप को लाचार अनुभव करता है। इस लिये धन कमाने के चक्कर में अपनी सेहत न खोयें। सेहत भी ऐसी चीज है जो खो देने के बाद आसानी से वापिस नहीं आती इस लिये सदैव ऐसा जीवन जीयें जिस में सेहत हमारी ठीक रहे। अच्छी सेहत और आन्तरिक खुशी प्रायवाची हैं। जब आप प्रसन्न हैं तो सेहत अच्छी होगी और जब सेहत अच्छी है तो आप प्रसन्न भी रहेंगे।

सब से बड़ी बात यह है कि हम क्षणिक खुशी और चिरस्थायी प्रसन्नता में फर्क समझें। दुनियाँ के यह भौतिक पदार्थ क्षणिक खुशी तो दे सकते हैं, अर्थात् हम कुछ क्षणों के लिये यह समझते हैं कि हमने दुनियाँ जीत ली है, पर चिरस्थायी प्रसन्नता इन भौतिक पदार्थों से नहीं आती उसके लिये उपर लिखी कुछ बातें सहायक हो सकती हैं। फोन न. 9217970381

प्याज के बारे में कुछ महत्वपूर्ण जानकारी

प्याज जब भी खाना हो तभी काटें। कटा हुआ प्याज अगर काफी समय तक पड़ा रहे तो जहर बनने लगता है। ऐसे प्याज से पकाई हुई भाजी भी नुकसान दायक है। यही बात आलू के लिये भी ध्यान में रखें। इसका कारण यह है कि कटे हुये प्याज और आलू में बैकटीरिया को सोखने की बहुत अधिक क्षमता है। ऐसे में जो वायु में बिमारी के किटाणु होते हैं उन्हें सोख कर प्रयोग करने वाले को बिमारी के किटाणु पहुंचा देता है।

बेहतर होगा सलाद भी काट कर बहुत समय न रखें। शादी और दूसरे पर्वों में रात को सलाद न खाना ही बेहतर है क्योंकि यह काफी समय तक कटा हुआ पड़ा रहता है।



Doubt---a Ladder to Enlightenment

Bhartendu Sood



Doubt and faith are antithetical especially in the perspective of religion. Faith begins where the doubt ends. But, to have faith without a spark of doubt leads to blind faith, often a source of misery and exploitation, as the history of mankind vindicates.

Buddha once visited a small town called Kesaputta whose inhabitants were known as Kalama. When Kalama's heard about the visit they met him and shared their dilemma like this. "O! Revered one, we are frequently visited by different religious Gurus who try to impress us with their religious doctrines. While glorifying their own doctrine they condemn and despise other's doctrine. These results in doubts of all sort in our minds whom to accept and whom to reject. We request you to show us the way so that we get rid of such doubts."

Then Buddha gave an advice which is the crux of religion

"It is always good that we have doubts. To follow the sermons and teachings blindly without exercising doubts can be very harmful. Next question is what to do. My advice is that be not led by the authority of religious texts as no religious text is infallible and likewise the aura around the person should not make you accept him or his teachings, without critically examining what he taught. Further you should not get influenced by appearances; delight in speculative opinions or visions of heaven which are only in next life. Don't let the noise of others opinions drown out your own inner voice, and most important have the courage to follow your heart, intuition and intellect.. When you are convinced that certain things are wholesome for you and have the potential to make your life happier and better accept them and follow them. Similarly, when you know for yourself that certain things are not good and will not make your life better then do not use any time in rejecting those. Yes, when you are stuck

up and are not able to decide what's good and what's not, go to your master"

Buddha went even further, "A disciple should examine even the master Tathagata (Buddha) before he embraces that."

We all are well aware that the innate quality to doubt changed Mool Shankar in to a great sage, nation builder, reformer and Veda's greatest scholar of all times Maharishi Dayanand Saraswati.

While sitting awake in Shiva temple in the middle of the night, he sees a mouse moving freely on the idol of Lord Shiva and eating what the devotees had offered to Shiva. Doubt arose in Moolshankar's mind, "If the Shiva who is given form of an idol lying before him, could not protect himself from this small mouse how could he be the protector and sustainer of the entire Universe. Definitely this idol can't be the true Shiva. He is somewhere else and that search for true Shiva took him to investigating Vedas which people had forgotten and were sure where those



It was the doubt in the ongoing beliefs, borne out of intellect and reasoning, which changed Mool Shankar to Maharishi Dayanand Saraswati.

could be found.

If you are Arya Samajist, look at every scripture, teachings, conventions and rituals in the way as Dayanand looked at them. Don't follow blindly what you are taught by these Acharyas. They themselves have very limited intellect and knowledge which further gets obstructed and truncated by greed and urge to make fast buck. Swami Dayanand exhorted in his scriptures to follow only the altruistic scholars and not those for whom it is a profession.

तीर्थ

नरेन्द्र आर्य 'विवेक'



पिछले दिनों घटी एक दुघटना ने मुझे अंदर तक झकझोर दिया और सोचने पर विवश कर दिया आखिर समाज में फैली भ्रान्तियां, पाखंड और अंधविश्वास हमें अधेगति की ओर ले जाकर पतन के किस गहरे खड्डे में धकेल रहे हैं ? आखिर किस प्रकार इस पतन से हम बच पायेंगे ।

घटना कुछ इस प्रकार की है । अपने एक सामाजिक कार्यकर्ता मित्र का फोन आया "विवेक जी आप कुछ प्रतिष्ठित लोगों को लेकर इधर आ जायें एक बंद मकान के कमरे से महिला के लगातार कराहने की आवाजें आ रही हैं

बीमार बूढ़ी मां को घर में बाहर से बंद करके चले गए अब कौन सा पुण्य मिलेगा । "वह तो तीर्थ पर मेरे लिए ही प्रार्थना करने गए हैं फिर मंदिर के पंडित ने भी कहा था "भगवान का नाम लेकर जाओ, तीर्थ जा रहे हो भगवान से मां के लिए प्रार्थना करना, भगवान खुद मां की रक्षा करेंगे । पंडित की बात मानकर बेटा बहू पोते सब मुझे दस दिनों के लिए अकेला छोड़कर दवाईयां रखकर और बाहर से ताला लगाकर चले गए थे ।" हम सोचकर हैरान थे आखिर यह कैसी तीर्थ यात्रा है जो बीमार बूढ़ी मां को अकेले बेसहारा छोड़कर तीर्थ के बहाने गर्मियों में पहाड़ों पर घूमने और गंगा में नहाने की इजाजत देती है और उस पर भी इस मौज मस्ती को तीर्थ की धर्मिकता का लबादा पहना दिया गया है । बूढ़ी बीमार मां को



।" बात चौंकाने वाली थी कुछ लोगों के साथ वहां पहुंचे मकान का ताला तोड़कर अंदर घुसे तो देखा कि एक बूढ़ी बीमार मां अपनी हालत पर रो रही है । पूछने पर पता चला कि बेटा बहू बच्चे गर्मियों में 'तीर्थयात्रा' पर गंगा स्नान करने गए हैं । आप साथ क्यों नहीं गईं तो बताया कि "पहले से ही बीमार थीं ।" फिर बच्चों को ऐसी 'तीर्थयात्रा' पर क्यों जाने दिया । 'उन्हें तीर्थ से रोकती तो मुझे पाप लगता ।" वह

अस्पताल में दाखिल करवाया गया और परिवार को संपर्क करके उस तथाकथित तीर्थ यात्रा से वापिस आने का अनुरोध किया गया ।

इस घटना ने सोचने पर विवश कर दिया आखिर तीर्थ किसे कहते हैं ? आखिर स्थान या नदी विशेष में स्नान का नाम तीर्थ क्यों पड़ा ? तीर्थ के क्या लाभ हैं ? इन प्रश्नों के उत्तर देव दयानन्द रचित वैदिक साहित्य में मिले

स्वमंतव्यामंतव्या प्रकाश में देव दयानन्द तीर्थ की परिभाषा देते हुए लिखते हैं “जिससे दुख सागर से पार उतरें, जो सत्यभाषण, विद्या, सत्संग, यमादि योगाभ्यास, पुरुषार्थ, विद्या दान आदि शुभ कर्म हैं उसी को तीर्थ कहते हैं। इतर जल स्थल आदि स्थान विशेष को नहीं।”

यहां तीर्थ की परिभाषा देते हुए कहा कि दुःख सागर से तारने वाले व उतारने वाले कर्म विशेष ही तीर्थ कहलाते हैं। यदि हम कर्म फल सिद्धांत को समझें तो हम जानेंगे कि मनुष्य मननशील विचारशील स्वतंत्रा-कर्ता है अर्थात् किसी भी कार्य को करने से पूर्व मनुष्य होने के नाते मनन विचार करता है। स्वतंत्रा कर्ता अर्थात् कार्य को करने, ना करने वा अन्यथा किसी अन्य प्रकार से करने के लिए स्वतंत्र है। स्वतंत्रा कर्ता होने के कारण मनुष्य परमपिता परमेश्वर की न्याय व्यवस्था के आधीन भोक्ता भी है। यही हमारे कर्मों के भोग फल ही हमारी नियति, प्रारब्ध या आगामी सुख दुःख का कारण बनते हैं। इस प्रकार यह स्पष्ट होता है कि हमारे कर्म ही फल के रूप में हमारे सुख या दुख का कारण बनते हैं। वेदों में भी स्पष्ट आदेश है कि प्रत्येक मनुष्य को अपने अपने किए प्रत्येक शुभ-अशुभ कर्म का पफल अवश्य भोगना पड़ता यानि यदि हम दुख सागर से तरना या पार होना चाहते हैं तो केवल परोपकार के यज्ञीय सद्कर्मों के द्वारा ही हो सकते हैं।

दुःखों से तारने वाले शुभ कर्मों की व्याख्या करते हुए सत्यार्थ प्रकाश के 11वें समुल्लास में देव दयानन्द लिखते हैं “वेदादि शास्त्रों का पढ़ना पढ़ाना, धर्मिक विद्वानों का संग, परोपकार, धर्मानुष्ठान, योगाभ्यास, निष्कपट, सत्यभाषण, सत्य का मानना, सत्य करना, ब्रह्मचर्य, आचार्य अतिथि माता-पिता की सेवा, परमेश्वर की स्तुति, प्रार्थना, उपासना, शान्ति जितेन्द्रियता, सुशीलता, धर्मयुक्त पुरुषार्थ, ज्ञान विज्ञान आदि शुभ

गुण कर्म दुःखों से तारने वाले होने से तीर्थ कहलाते हैं। यजुर्वेद में तीर्थ की व्याख्या इस प्रकार से है – नमस्तीर्थ्याय च ॥ यजुर्वेद 16/42

जो वेदादि शास्त्रा सत्य धर्म लक्षणों से युक्त हो उसको अन्नादि पदार्थ दे शिक्षा लेना तीर्थ कहलाता है।

नदियों के किनारे पनपने वाली प्राचीन सभ्यताओं में पुरातन सनातन शिक्षा पद्धति के रूप में गुरुकुलीय शिक्षा प्रणाली थी जहां ब्रह्मचारी विद्यार्थी गुरुकुल में रहकर आचार्यों से शिक्षा ग्रहण करते थे शायद इसीलिए नदी किनारे ही कालान्तर में तीर्थों के नाम से जाने जाने लगे। इन गुरुकुल रूपी तीर्थों में विद्यार्थी विद्यादि शुभ गुणों आर्य संस्कारों को ग्रहण कर सब सत्य विद्याओं का ज्ञान प्राप्त कर वेदादि शास्त्रों का अध्ययन कर पृथ्वी से ईश्वर पर्यन्त सभी पदार्थों का सत्य स्वरूप जान मान कर परोपकार करते हुए जीवन के लक्ष्य मोक्ष वा मुक्ति को प्राप्त करने का प्रयास करते थे। कालान्तर में जब सभी प्रक्रियाओं का अपने तुच्छ स्वार्थों के कारण पोंगे पंडितों ने सरलीकरण किया तो नदियों में स्नान कर पाप निवारण करते हुए मोक्ष तक सीमित कर दिया। नदियों में स्नान करने से हम शारीरिक स्वच्छता की आशा तो कर सकते हैं परन्तु मन बुद्धि आत्मा की शुचिता तो केवल वेदादि शास्त्रों के अध्ययन अनुकरण विद्या से ही आ सकती है। नदियों तालाबों में सामूहिक स्नान से पाप निवृत्ति तो नहीं हो सकती परन्तु संक्रामक रोग फैलने का खतरा जरूर होता है।

इससे यह निर्विवाद रूप से सिद्ध होता है कि दुःख सागर से तारने वाले यज्ञीय परोपकार के कार्यों का नाम ही तीर्थ है ना कि स्थान या नदी विशेष का नाम।

House No. 602, GF, Group Housing-53, Sector-20, Panchkula

Love is not about finding the right person, but creating a right relationship. It's not about how much love you have in the beginning but how much love you built till the end.

अगर आपको कुछ कहना है या पत्रिका subscribe करनी है

कृपया निम्न address पर सम्पर्क करें

भारतेन्दु सूद, 231 सैक्टर- 45-ए चण्डीगढ़.160047

0172.2662870, 9217970381, E mail : bhartsood@yahoo.co.in

Publisher & Printer Bhartendu Sood Printed at Umang Printer, Plot No. 26/3, Ind. Area, Phase-II, Chd. 9815628591

Owner Bhartendu Sood Place of Publication # 231, Sector 45-A, Chandigarh 160047

Phone : 0172-2662870 (M) 9217970381 Name of Editor : Bhartendu Sood

On countering depression

It can happen very quickly. One day we feel strong and happy. Then, suddenly, a seemingly small event can topple us. I try not to spiral down into doom when my plans get shattered.

In fact, I try not to worry and I think of all the other people who are also suffering due to their own losses. I recognise that I am not alone.

According to Dalai Lama, “Again, we may sometimes feel that our whole lives are unsatisfactory; we feel on the point of being overwhelmed by the difficulties that confront us.

This happens to us all in varying degrees. When this occurs, it is vital that we make every effort to find a way of lifting our spirits. We can do this by recollecting our good fortune.

We may, for example, be loved by someone; we may have certain talents; we may have received a good education; we may have our basic needs provided for – food to eat, clothes to wear, somewhere to live – we may have performed certain altruistic deeds in the past.”

This advice is helpful because when I slip into self pity, I often berate myself instead of loving myself. At this point, I realise that I must make a big effort to overcome my depression, and I will reach out to others to get me through.

The Embodiment of Compassion speaks from his own experience; that is why his words are so powerful, perhaps. He said, “We must take into consideration even the slightest positive aspect of our lives.

For, if we fail to find some way of uplifting ourselves, there is every danger of sinking further into our sense of powerlessness.

This can lead us to believe that we have no capacity for doing good whatsoever. Thus, we create the conditions of despair itself.”

I cannot help but remember the situations of the refugee Tibetans who want to return to their homeland but cannot; and I remember too all those imprisoned in Tibet because they are accused of speaking out or writing about their oppression by the Chinese communist government. My hope is restored when I think of their courage. Feeling their strength, I shake off my comparatively simple problems. But the dark cloud is always waiting for our



weak moments.

So, Dalai Lama insists we work harder. He noted, “This inevitably gives rise to the question – can we train the mind?

There are many methods by which to do this. Among these, in the Buddhist tradition, is a special instruction called mind training, which focuses on cultivating concern for others and turning adversity to advantage.

It is this pattern of thought, transforming problems into happiness that has enabled the Tibetan people to maintain their dignity and spirit in the face of great difficulties. Indeed I have found this advice of great practical benefit in my own life.”

इंडिया हाउस लंदन का मुख्य अभिनेता – श्री श्यामजी कृष्ण वर्मा

देश की स्वतन्त्रता के बाद कांग्रेस शासन में जो एक बड़ा अपवाद सामने आया वह यह था कि जिन देश के महान सपूतों ने स्वतंत्रता युद्ध में देश के लिये प्राण न्योछावर किये थे उनकी यादगार को स्थापित करने के लिये दो अलग-अलग माप दंड अपनाये गये।

एक वर्ग वह था जिन का सम्बन्ध सीधा कांग्रेस से था और दूसरे वे जिन को या तो कांग्रेस के तौर तरीके ठीक नहीं लगते थे या फिर उनके कांग्रेस पार्टी के शीर्ष नेताओं के साथ काम करते हुये मन मुटाव पैदा हो गये थे। जब की पहली श्रेणी में आने वाले नेताओं की यादगार को स्थापित करने के लिये सब प्रयत्न किये गये, दूसरी श्रेणी में आने वाले नेताओं के योगदान को न केवल मिटा दिया गया बल्कि तोड़ फोड़ कर उसे ऐसे आगे लाया गया जैसे उन्होंने स्वतन्त्रता योद्धा के रूप में कोई असामाजिक या आतंकवादी काम किये हों।

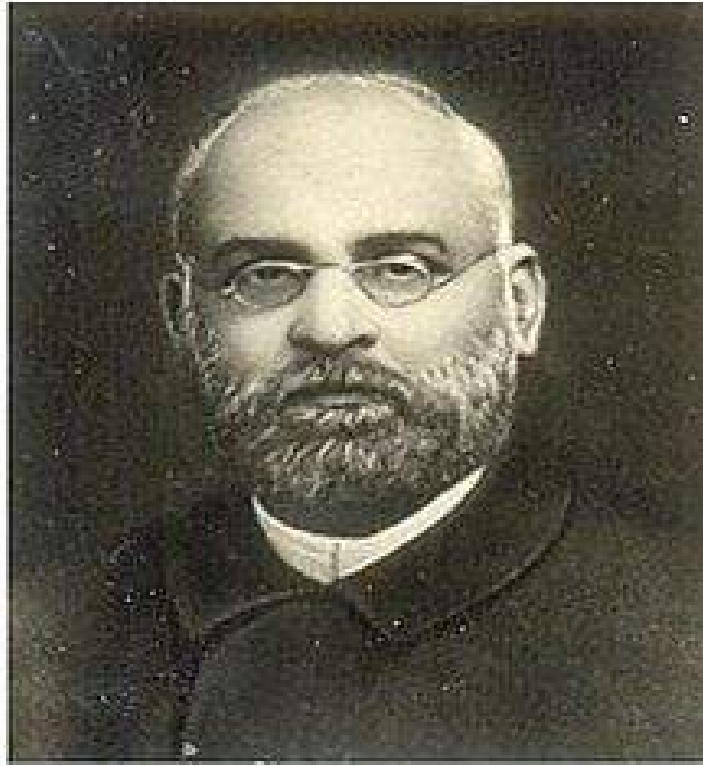
जब हम ऐसे दोहरे माप दंड अपनाते हैं तो न केवल हम उन महान सपूतों के साथ अन्याय करते हैं जिन्होंने स्वतंत्रता युद्ध में देश के लिये प्राण न्योछावर किये बल्कि हम अपनी सन्तानों को भी सच्चाई से दूर रख कर उनके साथ धोखा और अन्याय करते हैं। ऐसे ही एक महान सपूत थे श्री श्यामजी कृष्ण वर्मा जिन्होंने 19वीं सदी के प्रारम्भ में भारतीय स्वतन्त्रता आन्दोलन की आवाज को विदेशों तक पहुंचाने के लिये इंग्लैंड के लंदन शहर में **Indian Home Rule Society, India House** इंडिया हाउस **and The Indian Sociologist in London.** की स्थापना की थी। श्री श्यामजी कृष्ण वर्मा इंडिया हाउस में भारतीय स्वतंत्रता युद्ध की रूप रेखा तैयार

करते। दूसरे देशों में भारतीय संग्राम की आवाज अपने लेखों और **भाषणों द्वारा प्रबल करते।** शीघ्र ही वह उन सभी क्रांतीकारीयों के लिये प्रेरणा का स्रोत बन गये जो कि भारत माता को गुलामी की जंजीरों से मुक्त करने के लिये कठिबध थे, ऐसी ही क्रांतीकारियों में थे वीर सावरकर, मदनलाल दींगरा, लाला हरदयाल, सरदार सिंह राणा, मैडम कामा, वी वी एस नयर, विरेन्द्र नाथ चटोपाध्याय। यहां यह बताना आवश्यक है कि इंडिया हाउस के मुख्य भवन में, ठीक बीच में जो चित्र लगा हुआ था वह था श्री श्यामजी कृष्ण वर्मा के प्रेरणा स्रोत महर्षि दयानंद सरस्वती का।

हमारे प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने 4 अक्टूबर को श्री श्यामजी कृष्ण वर्मा को उनके 157 जन्म दिवस पर श्रधांजली अर्पित की। यही नहीं श्री नरेन्द्र मोदी 2003 में जब वह गुजरात के मुख्य मंत्री थे

तो श्री श्यामजी कृष्ण वर्मा की अस्थियां स्विटजरलैंड से लेकर आये थे और उनके जन्म स्थान माण्डवी में एक स्मृतिस्थल भी बनाया।

यहां यह बताना आवश्यक है कि श्री श्यामजी कृष्ण वर्मा स्वामी दयानंद के अनन्य भक्त थे। वह आर्य समाज मुम्बई के प्रधान भी बने। रतलाम और अजमेर के दिवान भी रहे। उनका कहना था कि **राष्ट्रवाद और सांस्कृतिक क्रांती का पाठ उन्होंने स्वामी दयानंद से ही लिया।** यहां यह भी समझाना आवश्यक है कि उस युग के जो आर्य समाजी थे वे आज की तरह कर्मकाण्डी आर्यसमाजी न हो कर आर्य समाज की विचारधारा को जीवन में ढालने वाले



थे, राष्ट्रवाद, संवेदनशीलता, अपनी उन्नति में खुश न रह कर समाज के बारे में सोचना जिस में मुख्य था। आज जब उन भूले विसरे स्वतन्त्रता सेनानियों को याद किया जा रहा है तो बड़े दुख की बात है कि कांग्रेस, कम्युनिस्टों का कहना है कि भारतीय इतिहास का भगवीकरण किया जा रहा है। नरेन्द्र मोदी सरकार को इस की परवाह किये बिना अपने काम में लगे रहना चाहिये। यह आवश्यक है कि जिन स्वतन्त्रता सेनानियों ने देश के लिये बलिदान दिये उन्हें इतिहास में उचित स्थान दिया जाये। कांग्रेस शासन में नकली स्वतन्त्रता सेनानियों की बहुत बल्ले बल्ले रही और उनके आगे के परिवार भी सरकार को लूट रहे हैं। अच्छा हो सरकार इन सभी केसिज का फिर से audit करे और चल रही लूट को बन्द करे तथा जिन स्वतन्त्रता सेनानियों के परिवारों के साथ दोहरी नीती के कारण अन्याय हुआ उन्हें न्याय दिलाये। आज के आर्य समाजी भी यह विचार करें कि क्या बात थी उस समय के आर्य समाजियों में कि उन्होंने राष्ट्रीय व अन्तराष्ट्रीय स्तर पर प्रसिद्धि पाई, एक नहीं अनेको

नाम हैं। According to Pattabhi Sitaramayya, the official historian of the Indian National Congress, over 80 per cent of the Satyagrahis who took part in various satyagraha movements were drawn from Arya Samaj.

आर्य समाज समाजिक क्रांति, राष्ट्रवाद का प्रतीक माना जाने लगा जब की आज हाल यह है कि आर्य समाज विवाह संस्कार या मृतक संस्कार के लिये ही याद किया जाता है। मेरे ख्याल में एक ही फर्क है वह है कि उस समय यह गुरुकुल नहीं थे और आर्य समाजी नेता बहुत पढ़े लिखे आधुनिक शिक्षा से लेस होते थे, चाहे बाद में संस्कृत का ज्ञान भी ले लेते थे। श्री श्यामजी कृष्ण वर्मा भी Oxford में पढ़े थे और संस्कृत का ज्ञान गुरुदत्त की तरह बाद में लिया।

एक और कार्य जो कि प्रधानमन्त्री नरेन्द्र मोदी को अवश्य करना चाहिये वह है कांग्रेस काल में उस समय के मन्त्री मणी शंकर अय्यर द्वारा अण्डमान जेल में वीर सावरकर द्वारा लिखी कुछ पक्तियों को पुर्नजिवित करना। उन्हें यह कार्य शीघ्र करना चाहिये।

M/S AMMONIA SUPPLY COMPANY

(An ISO 9001-2008 Certified Company)

Joins "VEDIC THOUGHTS" in its noble Pursuit of spreading 'Moral Values

धैर्य जिसका पिता है, क्षमा जिसकी माता है, लम्बे काल तक साथ देने वाली शान्ति जिसकी पत्नि है, सत्य जिसका मित्र है, दया जिसकी बहन है, मन का संयम जिसका भाई है, भूमी ही जिसकी शया है, दिशाएँ ही जिसकी वस्त्र हैं और ज्ञान रूपी अमृत का पान करना ही जिसका भोजन है, ऐसे योगी को किसी से भय नहीं हो सकता।

SUPPLIERS OF ANHYDROUS AMMONIA AND LIQUOR AMMONIA

D-4 Industrial Focal Point, Derabassi, District (Mohali) Punjab

Contact:- Rakesh Bhargav, Branch Manager 093161-34239, 01762-652465

Fax 01762-282894. Email- asco.db@ascoindia.com & ascodb@gmail.com

पत्रिका में दिये गये विचारों के लिए लेखक स्वयं जिम्मेवार है। लेखकों के टेलीफोन न. दिए गए हैं
न्यायिक मामलों के लिए चण्डीगढ़ के न्यायालय मान्य है।

अप्प दीपो भव अर्थात् स्वयं जलकर दूसरों तक प्रकाश पहुँचाओ

सीता राम गुप्ता



कहा जाता है अप्प दीपो भव। अपना प्रकाश स्वयं बनो। अत्यंत प्रेरक संबोधन है यह। ठीक है। आप में ऊर्जा है, उत्साह है। कौन रोक सकता है आपको अपना प्रकाश बनने से, अपना स्वयं का विकास करने से? करना भी चाहिये। जो अपनी मदद खुद करते हैं दूसरे भी उन्हीं की मदद

करते हैं। लेकिन एक बात है। एक खूबसूरत दीपक है स्नेह (तेल) से लबालब भरा हुआ। उसमें एक अत्यंत पुष्ट वर्तिका भी लगी है।

लेकिन इतना सब होते हुए भी दूसरों को प्रकाशित करना तो दूर वह स्वयं भी प्रकाशित नहीं है। वह तब तक न तो दूसरों को प्रकाश दे सकता है और न स्वयं ही प्रकाशित हो सकता है जब तक कि अन्य कोई दीपक उसे प्रज्वलित नहीं करता, उसे अपना प्रकाश नहीं दे देता। अर्थात् हमें अपना प्रकाश स्वयं बनने के लिए सबसे पहले बाह्य प्रकाश की आवश्यकता पड़ती ही है।

दीपक चाहे स्वयं अपना प्रकाश बन जाए लेकिन एक दीपक भी स्वयं नहीं बनता। उसको भी एक कुम्हार बड़े यत्न से निर्मित करता है। मिट्टी को कूटता-पीटता है, बारीक करके छानता है, उसे भिगोता है। फिर उसे आकार देता है। आकार देने के बाद उसे चाक से उतारने में भी उसका कम कौशल नहीं होता? अत्यंत मृदुता से उसे चाक से उतारता है। यदि यहाँ पर ज़रा सी चूक हो जाए जो आकार ही बिगड़ जाए बेचारे दीपक का। फिर सूखने के लिए रखता है। सुखाने के बाद रंगता भी है उसे और अंत में पकाता है। तब कहीं जाकर तैयार होता है एक लघु आकार का पात्र जिसे दीपक बनना होता है।

पात्र दीपक नहीं होता। पात्र को दीपक बनने के लिए स्नेह की आवश्यकता होती है। स्नेह यानी ऊर्जा। तैल अथवा घृत। किसान दिन-रात खेत में मेहनत करके तिलहन का उत्पादन करता है। फिर उसमें से तेल निकाला जाता है।

कोल्हू के बैल की भी महत्वपूर्ण भूमिका होती है तेल निकालने के लिए। वैसे किसान का पूरा परिवार ही कोल्हू के बैल की तरह लगा रहता है तब कहीं जाकर पात्र को स्नेह अथवा तेल से पूरित कर दीपक बनाना संभव हो पाता है।

स्नेह के उपरांत वर्तिका भी ज़रूरी है। वर्तिका के लिए रुई की ज़रूरत पड़ती है। वह भी किसान कर्म से ही प्राप्त होती है। किसान बीज बोता है। पौधों की देखभाल करता है, उनमें पानी देता है। पौधों पर फूल खिलते हैं। यही कपास

है। वह कपास चुनता है। कपास को ओंटा जाता है अर्थात् उसमें से बीज अलग किये जाते हैं। बीज अलग होने के बाद जो रेशा बचता है वही रुई है। इसी रुई से बनती है वर्तिका या बाती। पात्र में वर्तिका लगाकर इसे स्नेह से भर दिया जाता है इसे दीपक बनाने के लिए। फिर दूसरा कोई प्रज्वलित दीपक अपनी लौ से इसे भी प्रज्वलित कर जाता है।

और हम तो ऐसे दीपक हैं जो प्रकाश लेने के लिए दूसरे दीपक के पास जाने में भी परहेज़ करते हैं। संकोच के कारण या अहंकार के

वशीभूत होकर। हमारे संकोच, हमारी विवशता व अन्य सीमाओं को देखकर दूसरे कई दीपक स्वयं हमारे पास आ पहुँचते हैं हमें प्रकाशित करने ताकि हम स्वयं भी प्रकाशित हो सकें और दूसरों को भी प्रकाश दे सकें। और इसका आभास भी नहीं होने देते कि उन्होंने हमें प्रकाशित किया है।

फिर भी कहते हो अपना प्रकाश स्वयं बनो। कुछ कहते हैं अप्प दीपो भव। अपना प्रकाश स्वयं बनो। नहीं। ये कहना उचित प्रतीत होता है कि स्वयं को दीपक बनाओ। स्वयं जलो तभी दूसरों तक प्रकाश पहुँचा सकोगे। दीपक की सार्थकता भी इसी में है। वह स्वयं नहीं बन सकता लेकिन दूसरों के बनाने पर ज़रूर कुछ कर सकता है। वह स्वयं नहीं जल सकता लेकिन दूसरों के जलाने पर ज़रूर स्वयं प्रकाशित होकर दूसरों को भी प्रकाशित कर सकता है, उन्हें अंधेरे से बचा सकता है। इसी में निहित है संस्कृति की भावना वतता भी।



अन्योन्याश्रितता

उत्तुंग पर्वत-शृंखलाओं की बर्फीली चाटियों के स्पर्श से स्नात सुबह की भीतल हवा सबसे बेखबर अपनी ही मस्ती में बहती हुई जा रही थी। जब वह जंगल से गुज़र रही थी तो फूलों से लदी खुबसूरत-सी अल्हड़ एक वन्य लता ने अपनी खूशबू बिखेरते हुए और अपने रंगों को झलकाते हुए उसे आवाज़ दी और कहा, “ऐ भीतल हवा! तनिक मेरे समीप आओ और मेरी खूशबू से ओतप्रोत होकर इस संसार को शीतल ही नहीं सुगंधित भी करती हुई चली जाओ।” लेकिन गर्वोन्नत वायु ने सुगंध बाँटने को आतुर लता की एक न सुनी और इठलाती हुई आगे बढ़ गई।

कुछ देर के बाद हवा वापस वहीं लौटकर आ गई जहाँ वन्य लता से उसका वार्तालाप हुआ था। हवा की सारी मस्ती हवा हो चुकी थी। उसकी चंचलता जाती रही थी और वह एकदम उदास थी। वह चुपचाप उस वन्य लता के समीप बैठ गई। हवा को इस हालत में देखकर वन्य लता ने उससे पूछा, “अभी कुछ देर पहले ही तो तुम यहाँ से गुज़री थीं और अत्यंत प्रसन्नचित्त लग रही थीं और अब इतनी उदासमना दिखलाई पड़ रही हो। क्या बात है? क्या मैं तुम्हारी कुछ मदद कर सकती हूँ?” यह सुनकर हवा की

आँखों से अश्रु झरने लगे।

वायु ने कहा, “मैंने अहंकारवश तेरी बात ही नहीं सुनी और न तेरी खूशबू को ही साथ लिया। लेकिन मैं जैसे ही आगे बढ़ी गंदगी और बदबू में घिर गई। किसी तरह गंदगी और बदबू से बचकर आगे बढ़ी और घरों तक जा पहुँची

लेकिन लोगों ने मेरा स्वागत करने की बजाय अपने घरों की खिड़कियाँ और दरवाज़े बंद कर लिये। इसमें उनका भी कोई दोष नहीं। मुझमें ही दुर्गंध व्याप्त हो गई थी। भला दुर्गंधयुक्त वायु का कोई कैसे स्वागत कर सकता है? काश! मैंने तुम्हारी बात मान ली होती। तुम्हारा सहयोग ले लिया होता! लेकिन आज मैं संकल्प लेती हूँ कि मैं सबके सहयोग का स्वागत

करूँगी क्योंकि एक दूसरे के सहयोग के बिना हम न केवल स्वयं आगे नहीं बढ़ सकते हैं अपितु समाज के लिए भी कुछ नहीं कर सकते।”

ए. डी. 106—सी, पीतम पुरा, दिल्ली—110034

फोन नं 09555622323

Email: srgupta54@yahoo.co.in



प्रकाश औषधालय

थोक व परचून विक्रेता हमदर्द, डाबर, वैद्यनाथ, गुरुकुल, कांगड़ी,
कामधेनु जल व अन्य आर्युवैदिक व युनानी दवाईयाँ

Wholesaler & Retailer of :

HAMDARD, DABUR, BAIDHYANATH,

GURUKUL KANGRI, KAMDHENU JAL

& All kinds of Ayurvedic & Unani Medicines

Booth No. 65, Sec. 20-D, Chandigarh

Tel.: 0172-2708497

Seeing self in less fortunate

Bhartendu Sood

Quite often during the morning hours, we confront two contrasting pictures. One, of students rushing to schools and coaching centers by bus, cycle, car and scooter. The other picture which makes one sad is of deprived children who move around with large sacks on their shoulders to collect plastic and scrap from the heaps of debris or the leftovers that shop keepers leave outside at closing time. Children as small as six years are also seen doing all this. Unfortunately, this is the story of all Indian cities. Why should it happen when our government is not only providing mid day meals but has started evening schools for those who can't go to the school in the morning hours? According to me, it is happening because most of us are so self-centered that they are happy only with their own progress and are not concerned with what is happening around them.

If we ever engage these children in discussion, we will find that their mothers are working as our domestic help and their fathers are also engaged in petty jobs and services without which our survival is difficult in these mega cities. So important is the career of our own children to us that we don't mind if our own child, after having taken coaching for a year, which costs more than a lakh, suddenly declares that he is dropping this time and would like to attempt the exam only next year. I have seen parents anxiously escorting their children to examination centers, even if they have to take leave from office or abandon assignments which involve public contact and leave the general public suffering due to their absence from the office. But if our domestic help's child stops going to school, we don't have the time to speak to the school authorities. In most cases we don't even bother to know what her children do. But it makes a big difference when an educated person takes up the cause of such children as was demonstrated by Nobel laureate Kailash Satyarthi who according to one estimate lifted about 80,000 children from the subjugation and inhuman conditions of all sorts that can be a shame to any civilized society. What separated Satyarthi from others is that he was not only touched but he could see his own self and own children in those deprived ones.

Agreed, we all can't become Satyarthi as it calls for a firm resolve and a spirit of self-denial, self abnegation which is not every body's cup of tea. Only one in millions has that type of character and state of mind. But we can always do our bit. It simply calls for extending our vision of family. We can live the life in two ways. First is the one which

brings happiness only to us, it is *Atamtushti* and the second that brings happiness to many around us, it is *Loktushti*. Our religions ask us to opt for second one. The happiness that one derives from being useful to someone with whom he has only relationship of humanity is un-fathomed and it gives lot of satisfaction in being useful. As we feel duty bound to our children likewise we are duty bound to the society that gives us so much. Can you think of our existence without the people around us whether he is your domestic help or the newspaper vendor? The philosopher,



Gabriel Marcel, has gone so far as to say that we know our existence only through our relationships with others. He has asserted that 'I know I am here because you are there responding to me, a process that begins at the very start of life. Though the human being is superior to other animals in numerous ways, it is the human infant that is the most helpless when born. It is completely dependent for survival on its caregiver.

What we need to do is to distribute our love to as many as possible rather than preserving it for our two or three family members. Just as all our investments shouldn't be in one portfolio, likewise our love should not be only for our own one or two children. Deprived children will actually fetch us better returns. We need to keep in mind that the family is the building block of the society. The significance of family values can't be ignored. Perspectives, attitudes, ethics and morals which include cultivating compassion and love and respect for fellow beings are imbibed by children who learn through a process of Osmosis from family members and other near and dear ones, who teach by example.

क्रिया, उठाला, तेरहवीं तथा शान्तियज्ञ को सादा बनाने की आवश्यकता

भारतेन्दु सूद

हमारे समाज में मृत्यु का भी स्मृति-दिवस होता है। क्रिया, उठाला, तेरहवीं तथा शान्तियज्ञ आदि। यह अवसर होता है चिन्तन और मनन करने का। ताकी जो व्यक्ति चला गया है उसकी अच्छी बातों को परिवार और समाज के लोग याद कर प्रेरणा लें। क्रिया शब्द का अर्थ है—करना। इसका मूल प्रयोजन है कि जो जीव चला गया है, उसके गुण, कर्म, स्वभाव, योगदान विशेषताओं आदि का स्मरण किया जाए, दिवंगत के जीवन से प्रेरणा ली जाए और शरीर तथा संसार की नश्वरता, अस्थिरता, क्षणभंगुरता आदि का स्मरण करते हुए आत्मा के अजर-अमर व नित्य स्वरूप का चिन्तन किया जाए। ऐसे अवसर पर मृत्यु से छूटने के उपायों का चिन्तन करते हुए सत्संग, प्रभुभक्ति, दानपुण्य आदि की भावना जागृत करने की प्रेरणा आनी चाहिए। प्रभु की शरणागति ही मानव को मृत्यु के बन्धन, जिसको मोक्ष कहा गया है, से छुड़ाने में समर्थ है। मृत्यु तो हमें सचेत करती है, जगाती है और हमारी बेहोशी को तोड़, हमें सोचने के लिये मजबूर करती है कि मुझे भी एक दिन जाना है। मृत्यु का संदेश हमें सँभलने, सुधरने और कुछ करने की प्रेरणा देता है। ऐसे अवसरों तथा स्थानों पर मृत्यु और परमात्मा को स्मरण किया जाना चाहिये, दुःखीजनों के प्रति संवदेना और सहानुभूति प्रकट की जानी चाहिये। प्रभु से प्रार्थना में दुःख और वियोग सहन करने की शक्ति तथा सद्बुद्धि की कामना की जानी चाहिये। सब मिलकर मृत्यु को याद रखें और उससे बचने के उपाय सोचें। परन्तु आज क्रिया, उठाला, तेरहवीं आदि मात्र हाजिरी, दिखावा तथा प्रदर्शनात्मक होते जा रहे हैं। और सब से चिन्ता की बात है कि इस प्रदर्शन की होड़ में यह पर्व शादी विवाह की तरह महंगा से महंगा होता जा रहा है। शादी की तरह ही उस दिन भी अच्छा सवादिष्ट और महंगा खाना परोसने का विधान प्रारम्भ हो गया। अगर उस दिन भी वही खाना दिया जाये जो कि शादी विवाह के अवसर पर देते हैं तो दोनों दिनों के महत्व में क्या फर्क रह गया। एक दिन हंसी खुशी का है

दूसरा दिन शान्त रहकर मनन करने का। क्या हम उस दिन जो भी करें उस में सादगी नहीं रख सकते। क्यों हम उस दिन भी 5-6 चीजों के साथ और दो तीन मीठे पकवानों के साथ ही खाना देना चाहते हैं। आज लाखों रुपये इसी पर्व पर खर्च होते हैं। मेरे देखते देखते ही शादी विवाह इतने महंगे पर्व बन गये हैं और आज यही हाल क्रिया, उठाला, तेरहवीं जैसे पर्वों का होने जा रहा है। यहां एक बात जो याद रखने की है कि जो पैसे वाले कुछ भी करते हैं वह दूसरों के लिये एक बँच मार्क बन जाता है।



मैं कहता हूँ खाना अवश्य दीजिये, जो दूर से आयें हैं उन को खाना चाय आदि देना हमारा कर्तव्य है पर उसको सादा भी रखा जा सकता है जैसे की सादी दाल और एक सब्जी, यही हम घर में खाते हैं। पर खाना तो साधन है, अन्त नहीं। आईये मुख्य उद्देश्य से न भटकें और इस अवसर को ऐसे मनाये कि हमें एहसास हो जाये कि मुझे भी एक दिन जाना है और हमें सँभलने, सुधरने और कुछ करने की प्रेरणा प्राप्त हो। साथ में यह भी कहूंगा कि जैसे हमारे सिनेमा में दिखातें हैं इस अवसर पर कोई खास ड्रेस जैसे कि सफेद रंग के कपड़े पहनना कोई आवश्यक नहीं। आप अपने आम कपड़े पहने।

कौड़ा परिवार द्वारा एक सुन्दर उदाहरण

कौड़ा परिवार चण्डीगढ़ का प्रतिष्ठित आर्य समाजी परिवार है। अभी जब श्री योगेन्द्र पाल कौड़ा जी की धर्मपत्नि स्व श्रीमती कमलेश कौड़ा की याद में सत्संग किया गया तो उन्होंने वैदिक परम्परा के अनुसार श्रीमती कमलेश कौड़ा के चित्र के आगे न पैसे चढ़ाने दिये और न ही आये हुये लोगों को प्रणाम करने दिया।

यह नहीं कि इस वैदिक आर्य समाजी परम्परा का आर्य समाज वालों को पता नहीं पर पैसे के लालच में हमारे आर्य समाजों में इन आर्य समाजी परम्पराओं को तलांजली दे दी जाती है। एक चण्डीगढ़ की आर्य समाज का पुरोहित इसी में हजारों रूपया महीने मे कमाता है। कसूर उसका नहीं कसूर है मैनेजमेंट का जो आंखे मूंद कर इन अवैदिक परम्पराओं को चलने दे रही है। सिर्फ एक हवन कर लिया उस से आर्य समाजी थोड़े ही बन जाते है। आज हमारी आर्य समाजों में वही कुछ किया जाता है जिसमें कमाई हो और इस कमाई के चक्कर में बहुत सी बातें वे की जाती हैं जो कि वैदिक मान्यताओं के विरुद्ध है। वेद कहता है कि किसी भी व्यक्ति के केवल विचार और ज्ञान को ही नहीं देखा जाता अपितु उसके आचरण की शुद्धता देखी जाती है।

जिस तरह गुरद्वारों और मस्जिदों में कोई भी मर्यादा के विरुद्ध कार्य नहीं होने दिया जाता यही व्यवस्था आर्य समाजों में

होनी चाहिये। किया, उठाला, तेरहवीं तथा शान्तियज्ञों व शादियों के लिये हाल उपलब्ध कराना बहुत अच्छी बात



है, पर उस से भी ज़रूरी है कि वैदिक परम्परायें भंग न हों। फोटो के आगे फूल चढ़ाना और पैसे चढ़ाने की अनुमति देना तो पूरी तरह आर्य समाजी मान्यताओं के विरुद्ध है।

यह भी है विवाह उत्सव मनाने का ढंग

महेन्द्र गढ़ में श्री बीर सिंह ने एक बहुत ही सुन्दर उदाहरण पेश किया। अपने बेटे की शादी में फजूल के दिखावे पर खर्च करने की बजाये उन्होंने 15 लाख रु गउशाला के लिये दान दिये। यही नहीं उन्होंने सगुण के तोर पर एक रुपया ही लिया और किसी भी प्रकार का दहेज नहीं लिया। लड़की के पिता सिंह ने जो लड़की को दहेज देना था वह धन राशी अनाथालय कि लिये दान में दी। यही नहीं अतिथीयों से भी कोई उपहार नहीं लिया।



दुल्हे के पिता बीर सिंह यादव गऊशाला के मैनेजर को 15 लाख का चैक देते हुए।

सवा करोड़ गायत्री यज्ञानुष्ठान एवं ब्रह्मापारायण महायज्ञ

4 अक्टूबर 2014 से 8 मार्च तक चलेगा

न ही यह यज्ञ है न ही यह आर्य समाज की विचारधारा का प्रतीक है। बाकी चाहे कुछ भी हो। इसलिये आर्यसमाज के नाम पर ऐसे हवन करना और आर्य समाज को ऐसे व्यवसायिक आयोजनों से दूर रहना चाहिये।

सम्पादक का इस बारे में टिपनी और विचार

‘यज्ञ’ शब्द का अर्थ है त्याग व दान अर्थात् कल्याण व परोपकार का कार्य। अर्थात् जिस कार्य द्वारा आप त्याग व दान करके दूसरे ज़रूरत मन्द व्यक्ति या समाज के ऐसे वर्ग का भला करते हैं जिसे आपकी सहायता की आवश्यकता है उसे यज्ञ कहते हैं। ऐसे छ महीने तक चलने वाले अग्निहोत्र यज्ञ में नहीं आ सकते। इस में जनकल्याण तो होने वाला नहीं। हां चन्द व्यक्तियों की जेब मोटी हो जायेगी। परियावरण को शद्ध करने के नाम पर यह पाखण्ड है। आज जब हर घर में दो तीन गाड़ीयां हैं। सड़के गाड़ीयों से भरी हैं और गांवों का भी लगभग यही हाल है। ऐसे में ऐसे हवन परियावरण को शुद्ध करने के सक्षम नहीं। किसी को विश्वास नहीं तो जो इस हवन से पहले वहां के वातावरण में जीवन सेवी गैसों की मात्रा देख ले और छ महीने के बाद देख ले कोई फर्क नहीं होगा।

यही पैसा हम लोगों को शौचालय बनवाने के लिये दें, शिक्षा के प्रसार के लिये दें, स्वास्थ्य सेवायें प्रदान करने के लिये दें। गरीब कन्याओं को धन की सहायता करें, हस्पतालों के पास धर्मशालाएं बनवायें तो वह यज्ञ होगा। वच्चों को दूध पीने के लिये नहीं और यहां मनो के हिसाब से शुध देसी घी भस्म कर दिया जायेगा। जरा सोचिये, क्या इसको यज्ञ कहते हैं। आर्य समाजी उसको कहते हैं जो तर्क से हर बात को सोचता है न की अन्धविश्वासी होता है। अगर आप ठीक मायने में आर्य समाजी हैं तो सोचिये, यह छ महीने तक चलने वाले अनुष्ठान यज्ञ कहे जा सकते हैं। क्यों हमारे अच्छे आर्य समाजी नहीं रहते? क्योंकि यही सब कुछ करना



था तो दूसरे मत काफी है।

मैंने कभी नहीं पढ़ा कि स्वामी दयानन्द ऐसे महीनों चलने वाले हवन करते थे। वह तो समाज में फैली कुरीतियों को दूर कर लोगों को सुख की सांस, स्वतन्त्रता की महक देने में लगे थे। महान व्यक्ति समय के अनुसार कुछ बातें बताते हैं पर यह जरूरी नहीं कि सदैव उनकी उपयोगिता रहे। जैसे स्वामी दयानन्द ने कहा कि व्यक्ति के मरने पर उसका संस्कार उतने घी से करें जितना की उसका वजन है। यह बात उस

समय शायद ठीक हो जब भारत की जनसंख्या 18 करोड़ थी और पशु धन 75 करोड़ था। पर आज नहीं जब की न लकड़ी है न घी। आज विद्युत प्रणाली से ही संस्कार करना ही समाज के हित में है। यह ठीक है कि वेदों में और स्वामी जी ने व्यक्ति के अपने करने की बहुत सी बातें बताई पर उनका व्यवहारिक रूप तो बदले हुये समय में हमने देखना है। वेदों में और स्वामी दयानन्द ने यज्ञ तो चार और भी बताये हैं। पितृ यज्ञ,

ब्रह्म यज्ञ, अतिथी यज्ञ और बलिवेशव यज्ञ। मुझे हैरानगी है हम उनकी बात क्यों नहीं करते। क्योंकि उन में इन आचार्यों को कमाई नहीं है।

मेरा फिर अनुरोध है कि आप उन्नतीशील progressive आर्य समाजी बनें न कि पौराणिक आर्य समाजी। मैं आपको हवन करने से मना नहीं करता पर घर में करें और समझ कर करें जो कि सबको समझ आयै ऐसे व्यवसायिक हवनों का कोई लाभ नहीं। इनके लिये न पैसा दें न ही समय।

Neighborhood used to be second home

Neelam

When we were young we were disciplined, never argued with our elders, used to play a lot in the grounds, used to help our mother in household chores, spend our holidays with grandparents and so on and on". This is the topic discussed by groups of retired people. "Credit for all this goes to our parents" I thought to myself and then posed a question to me, "Have we not failed to raise our children and impart them the qualities that we imbibed as children from our parents?"

The changing lifestyle has blessed us with lots of comforts and over the time we have forgotten the values of a few basic necessities that were the essential component of our life. Bringing up of children is more focussed on how many materialistic things we can provide them rather than our time to them. The most important thing a child needs at the early stage is tender care and the security which becomes his lifelong asset. I still remember that in our childhood whenever we were in a problem and needed help, someone at home or in the neighbourhood, treated as second home, was always available for help. But now we have closed ourselves in the shells and children do not have the access to sharing their problems with everyone. Most parents, these days

are away till late evening.

Despite providing them with all the facilities, the children are not being raised to be physically strong and independent.

We need to come out with solutions so that our children are physically strong and emotionally secure and that requires the intervention of elders and our being sensitive to the needs of the family members and society so that they can also take pride in their upbringing.

Atharv Veda says "Life is life with others. Man can not live as an individual. He is a social organism. God loves him only who loves other beings and it includes cattle, birds and other creatures as well. Man's glory lies in being a member of big family. On the one hand, man is

bound by blood kinship-his parents, his wife and children, on the other hand he is linked with every individual of the society whether near or far. It is given to man to link himself with those who constitute his ancestry, and also think of those who could be his posterity. Man thus should live, work and die for the society by rising above his "kinship."



विज्ञापन / Advertisement

यह पत्रिका शिक्षित वर्ग के पास जाती है आप उपयुक्त वर-वधु की तलाश, प्रियजनों को श्रद्धा सुमन, अपने व्यापार को आगे ले जाने के लिये शुभ-अशुभ सूचना विज्ञापन द्वारा दे सकते हैं।

Half Page Rs. 250/- Full Page Rs. 500/- 75 words Rs. 100

Contact : Bhartendu Sood 231, Sector 45-A, Chandigarh
9217970381 and 0172-2662870

शायद हम सब कुछ होते हुये भी गरीब है

अशोक कुमार



एक बहुत अमीर व्यक्ति अपने इकलोते बेटे को, जिसको कि दुनिया के सब सुख आराम थे, एक बहुत गरीब गांव में यह दिखाने के लिये ले गया कि गरीबी क्या होती है। जब उन्होंने सारा गांव घूम लिया तो पिता ने बेटे से पूछा—बेटा बताओ आपने क्या देखा? बेटा बोला—हम पैकड और डिब्बों में

बन्द खाना खाते हैं जब कि वे ताजी सब्जियां उगा कर खाते हैं। हम ऐअर कंडिशनर लगा कर सोते हैं जब कि वे खुले आसमान के नीचे सोते हैं। हम लाखों रुपया खर्च कर पालने के लिये हाइबरिड कुत्ता लाते हैं जो कि अच्छी खुराक खाने के बावजूद भी रक्षा करने में असमर्थ लगता है जब कि न तो वे कुत्ते खरीदते हैं न ही पालते हैं फिर भी बाहर वाले आदमी को कुत्ते रात को अन्दर नहीं आने देते। हम लाखों रुपया खर्च कर स्वमिंग पूल बनाते हैं जब कि वे बहती नदी तालाब के खुले पानी में जब चाहा नहाते हैं। हमें तो स्वमिंग पूल का पानी बदलना पड़ता है जब कि वे यह सब किये बिना ही ताजे पानी का आनन्द उठाते हैं। हम कम्प्यूटरों, मोबाईल फोनों पर गुमसुम होकर लगे होते हैं, और ऐसा लगता है भारी तनाव में हैं, हमारे पास कोई आयें तो हमारे पास उस के लिये समय नहीं होता और हम आधे मन से उसकी और देखते हुये कम्प्यूटरों, मोबाईल पर लगे रहते हैं और इंतजार करते हैं कि कब वह हमारे यहां से जाये ताकी हम अपनी चैट में निर्विधन लग जायें। जाने वाला उदास होकर वापिस जाता है। जब कि उनके बच्चे खुले में खेल रहे होते हैं और उनके हंसने की आवाजें और ठहाके दूसरों को भी आनन्दित कर देते हैं और जोश से भर देते हैं। देखने वाला सोचता है कि मैं भी कुछ समय इनके साथ खेल लूं या इनकी खेल का आनन्द उठा लूं, जों कि आप को भी तरो ताजा कर देता है। जब वे गुलली डंडा क्रिकेट आदि मैदान में खेल रहे होते थे, जो कई बार बड़े बजुर्ग भी साथ में खेलने लग पड़ते थे व आनन्द लेते थे। पर हम तो घर के अन्दर ही अलग कमरों में मोबाईल पर लगे रहते हैं उस में बचारे बजुर्ग क्या आनन्द लेंगे?

मुझे चालक कार में छोड़ कर आता है वापिस लेने आता है। कोई मेरे साथ नहीं होता जिस से मैं बात करूं। जब कि वहां के बच्चे पैदल और साईकलों पर हंसते, खेलते और आपस में बातें करते हुये स्कूल जाते हैं। हमारी इस पोश लोकेलिटी में हर कोई एक बड़ी गाड़ी में आता है और सीधा अपने घर में

घुस जाता है। किसी को भी अपने पड़ोसी से बात करने का समय ही नहीं और न ही ज़रूरत समझता है। जब कि वे न केवल अपने पड़ोसियों के बारे में जानते ही हैं बल्कि अपने सारे गांव के लोगों के बारे में भी जानते हैं। हमारे घरों में सुनसान व सन्नाटा रहता है जो थोड़ी बहुत बोलने की आवाज आती है वह हमारे काम करने वालों के घरों से आती



है। जब कि उनके घर तो जीवन से भरे हुये लग रहे थे। पिता जी मुझे सचमुच यह ऐहसास हुआ कि हम उनके मुकाबले बहुत गरीब है। पिता की आंखें खुल गई थी उसने झट से अपने बेटे को छाती से लगा लिया। उसे पता लग गया था कि भौतिक पदार्थों में जीवन की खुशी नहीं है। हम अपनी खुशी के लिये एक के बाद एक भौतिक पदार्थ खरीदते तो हैं पर वे खुशी देने की बजाये कम करते जाते हैं।

एक महान दार्शनिक अमेरिका घूमने गया था वहां के एक स्थानिय वासी ने उस से पूछा—आप ने अमेरिका में क्या देखा। दार्शनिक का जवाब था—आप के यहां हर एक के पास हर चीज काफी मात्रा में है, चाहे टैलिविजन हों या रैफरीजरेटर, पर साथ में हर एक के पास एक पुस्तक भी है, 'हम खुश कैसे रहें'।

हमारे वेद शास्त्र धन सम्पत्ति इकठठा करने की प्रवृत्ति से व्यक्ति को रोकते हैं, कारण ये व्यक्ति की खुशी को खत्म कर देते हैं। अपरिग्रह यही है—उतना ही किसी चीज को रखें जितनी की आपको आवश्यकता है।

एक बहुत अमीर व्यक्ति किसी महात्मा के पास गया और बोला—महात्मा मेरे पास सब कुछ ज़रूरत से भी अधिक है फिर भी मैं प्रसन्न नहीं हूं। महात्मा बोले जो भी आपकी आवश्यकता से अधिक है उसे ज़रूरत मन्दों तक पहुंचाने का प्रयत्न करो। आप खुश हो जाओगे।

अगर आप की अधिक धन सम्पदा ने आपका सुख चैन ले लिया है तो उसे दूसरों के साथ बांटने का, दूसरों द्वारा प्रयोग करने का ढंग सोचें। आपका सुख चैन वापिस आ जायेगा। फोन न. 9878922336

रजि. नं. : 4262/12

॥ ओ३म् ॥

फोन : 94170-44481, 95010-84671



महर्षि दयानन्द बाल आश्रम

मुख्य कार्यालय - 1781, फेज 3बी-2, सैक्टर-60, मोहाली, चंडीगढ़ - 160059
शाखा कार्यालय - 681, सैक्टर-4, नज़दीक गुरुद्वारा, मुंडीखरड़-मोहाली
आर्य समाज मंदिर, चंडीगढ़ व पंचकुला

E-mail : dayanandashram@yahoo.com, Website : www.dayanandbalashram.org



Vikas Pawar celebrating his son Tej birthday with the Bal Ashram children

धार्मिक माता/पिता 2100 प्रति माह धार्मिक सखा 500 प्रति माह
धार्मिक बहन/भाई 1500 प्रति माह धार्मिक सहयोगी 100 प्रति माह
धार्मिक बन्धु 1000 प्रति माह धार्मिक साथी 50 प्रति माह
आप आर्थिक सहयोग देकर भी पुण्य के भागी बन सकते हैं :-

A/c No. : 32434144307
Bank : SBI
IFSC Code : SBIN0001828

योगिंदर पाल कौड़ा,

नरेन्द्र गुप्ता

लेखराम (+91 7589219746)



स्वर्गीय
श्रीमती शारदा देवी
सूद

निर्माण के 63 वर्ष



स्वर्गीय
डॉ० भूपेन्द्र नाथ गुप्त
सूद

गैस ऐसीडिटी शिमला का मशहूर कामधेनु जल

(एक अनोखी आर्युवैदिक दवाई
मुख्य स्थान जहां उपलब्ध है)

Chandigarh-2691964, 5076448, 2615360, 2700987, 2708497, Manimajra-2739682, Panchkula 2580109, 2579090, 2571016, Mohali-2273123, 2212409, 2232276, Zirakpur-295108, Shimla- 2655644, Delhi-23344469, 27325636, 47041705, 27381489, Yamunanagar-232063, Dehradun-2712022, Bhopal-2550773, 9425302317, Jaipur-2318554, Raipur-9425507000, Lucknow-2683019, Ranchi-09431941764, Guwhati-09864785009, 2634006, Meerut- 8923638010, Bikaner-2521148, Batala-240903, Gwalior-2332483, Surat-2490151, Jammu-2542205m, Gajabad-2834062, Noida-2527981, Nagpur-9422108322, Ludhiana-2741889, 9915312526, Amritsar-2558543, Jalandhar-2227877, Ambala Cantt-4002178, Panipat-4006838, Agra-0941239552, Patiala-2360925, Bhatinda-2255790

Medicine is available in other places also, Please contact us to know the name of the shop/dealer.

शारदा फार्मासियुटिकलज मकान 231ए सैक्टर 45-ए चण्डीगढ़ 160047

0172-2662870, 92179 70381, E-mail : bhartsood@yahoo.co.in

जिन महानुभावो ने बाल आश्रम के लिए दान दिया



Late Sh. Gian Muni



Gautam Chakraborti



Dr. Sanjay Gupta



Astha Puri



Ashwani Soni, Renu Soni



Vikrant Soni



Rahul Soni



Prateek Soni



मजबूती में बे-मिसाल

घर का निर्माण डीप्लास्ट के साथ

40 years
in service



DIPLAST

PLASTICS LIMITED

AN ISO 9001 COMPANY

C-36, Industrial Phase 2, S.A.S. Nagar, Mohali (Pb.) India
Phone : +91-172-2272942, 5098187, Fax : +91-172-2225224
E-mail : diplastplastic@yahoo.com, Web : www.diplast.com

QUALITY IS OUR STRENGTH

विज्ञापन / Advertisement

यह पत्रिका शिक्षित वर्ग के पास जाती है आप उपयुक्त वर-वधु की तलाश,
प्रियजनों को श्रद्धा सुमन, अपने व्यापार को आगे ले जाने के लिये
शुभ-अशुभ सूचना विज्ञापन द्वारा दे सकते हैं।

Half Page Rs. 250/- Full Page Rs. 500/- 75 words Rs. 100

Contact : Bhartendu Sood 231, Sector 45-A, Chandigarh
9217970381 and 0172-2662870